www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-3* *October 2024***

प्राचीन भारत में गणिका जीवनः बौद्ध साहित्य के विशेष सन्दर्भ में

अर्चना

शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो0 दिगविजयनाथ

आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

बौद्ध ग्रन्थों एवं धर्मशास्त्रों से प्राप्त सन्दर्भो से स्पष्ट होता है कि भारत में गणिकाओं का अस्तित्व सभ्यता के उदय के साथ ही विद्यमान था। गणिका समाज में रस की पयस्विनी के रूप में स्थापित थी। आमोद–प्रमोद एवं आनन्द की कुल्या की तरह यह समाज के विभिन्न वर्गो के आकर्षण के केन्द्र में थी। गणिका जीवन में सामान्य रूप से संगीत, नृत्य, गायन, वादन का सम्मिश्रण होता था। बुद्ध के काल में जब नगर जीवन का प्रारम्भ हुआ तब नगरों के समृद्ध वातावरण में गणिका वृत्ति को विशेष प्रोत्साहन मिला।

ध्यातव्य है कि ई0पू0 छठी शती में मगध राज्य के उत्तर में कई गणराज्य स्थित थे। बौद्ध साहित्य में सम्पूर्ण गण के लिए नगर बधुओ को चुने जाने का उल्लेख मिलता है ये गणिकाएँ अपने रूप माधुर्य एवं नृत्य गान आदि से दर्शकों का मनोरंजन करती थी। स्वभाविक रूप से अभिजात वर्ग के तरूणों में इसके साथ सहवास की प्रबल कामना होती थी और ये गणिकाएँ भी इन तरूणों के रात्रि विश्राम का मूल्य निर्धारित करती थी। बौद्ध साहित्य प्राप्त सन्दर्भों से गणिकाओं के जीवन पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

पालि बौद्ध साहित्य से तत्कालिन समाज में गणिकाओं की समृद्ध स्थिति का संकेत मिलता है। भगवान बुद्ध के समय में मगध एवं वैशाली में गणिकाओं का अस्तित्व था। इस काल की दो प्रसिद्ध गणिकाओं का उल्लेख साहित्य में मिलता है। वैशाली की जनपद कल्याणी अम्बपाली उस युग को सर्वगुण सम्पन्न गणिक थी। अम्बपाली वैभवशाली वैशाली नगरी की अत्यन्त सुन्दर नृत्यगीत प्रवीण गणिका थी। वैशाली के रसिक नागरिकों के प्राण आम्बपाली के आवास में निवास करते थे। आम्बपाली की अद्‌भूत नृत्य एवं सौन्दर्य की ख्याति पड़ोसी जनपदों में भी फैली हुयी थी। महावग्ग नामक बौद्ध ग्रन्थ से आम्बपाली के बारे में सूचनाएँ मिलती है। वैशाली से प्रत्यागत एक श्रेष्ठि मगध सम्राट बिम्बिसार से आम्बपाली का वर्णन करते हुए कहता है कि वहाँ आम्बपाली नाम की गणिका, निवास करती है। जो परम सुन्दरी, रमणीया, नयनाभिराम, सुन्दरवर्णा, गायन, वादन नृत्य विशारदा तथा अभिलषित बहुदर्शनीया है।[1] महावग्ग में ही राजगृह को प्रख्यात गणिका मगध की सालवती का उल्लेख मिलता है। यह गणिका नृत्य एवं संगीत में अत्यन्त दक्ष थी। इसके गुणों के कारण ही इसका गणिकाभिषेक हुआ था।[2] ये दोनों ही कला एवं रूप की दृष्टि से अन्य गणिकाओं से श्रेष्ठ थीं। ये एक तरह से राजनर्तकियाँ थी अतएव इनका सम्मान भी अधिक थी। इनके अधीन अनेक गणिकाएँ होती थी। जो इनके समूह की श्रीवृद्धि थीं। गणिकाभिषेक उस काल का अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्मान था। जो विशिष्ट गणिकाओं को ही प्रदान किया जाता था। समाज का अभिजात वर्ग इन गणिकाओं का गुणग्राही होता था। इनके भरण–पोषण के लिये यह वर्ग नाना प्रकार के उपहार देता था।[3] अपनी विलासिता के पोषण एवं रसानुभूति हेतु अपनी सम्पदा का एक भाग इन नर्तकियों के आवास में पहुँचाया करता था।

इन गणिकाओं की आवास निरन्तर नूपूरों के रूनझुन एवं गीत संगीत के मधुर स्वरों से गुंजित हुआ करता

था। नगरों में इनके कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ करता था। सामान्य एवं विशिष्ट जन इन आयोजनों का लाभ उठाया करते थे। इनके यहाँ आना अशोभनीय नहीं माना जाता था। वैशाली की अम्बापाली का आतिथ्य तथागत बुद्ध ने भी ग्रहण किया था। तथागत द्वारा अम्बापाली के आतिथ्य को ग्रहण करने से गणिका का सम्मान बढ़ा।[4] इन राजगणिकाओं से उत्पन्न पुत्र भी समाज में सम्मानजनक स्थान का भागी था। राजगृह की नर्तकी सालवती का पुत्र जीवक उस काल का अत्यन्त प्रख्यात वैद्य था।[5] इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि परवर्ती काल की तरह उस काल में गणिका पुत्र हीन दृष्टि से नही देखा जाता था। नगरों में निवास करने वाले गणिकाओं की आय अधिक होती थी तथा वे विलासयम जीवन व्यतीत करती थी। जावकों से इस सम्बन्ध में प्रचुर सूचनाएं प्राप्त होती है।[6] बौद्ध ग्रन्थों से गणिकाओं के स्वभाव के बारे में भी सूचनाएं मिलती हैं। कुछ गणिकाएं धनार्जन के लिए छल का भी प्रयोग करती थीं। एक जानक मे ऐसी गणिका का उल्लेख मिलता है जिसका प्रेमी एक श्रेष्ठि पुत्र था जो प्रति रात्रि के लिए एक सहस्र पण प्रदान करता था। इस व्यय के कारण धीरे–धीरे उसका धन समाप्त हो गया। इसके उपरान्त जब वह उस गाणिका के पास गया तब उस गाणिका ने उस श्रेष्ठिपुत्र को अपने आवास से बाहर निकलवा दिया।[7] कुछ गणिकाएँ दुस्साहसी भी होती थी, जो उत्तम कोटि के नागरिकों के अलावा दस्युओं को भी अपने प्रेम का दान देती थी। एक विवरण सुलाना नाम की गणिका के बारे में मिलता है जो अति बुद्धिमती एवं साहसी थीं। इसने एक दस्यु से सम्बन्ध बना रखा था। यद्यपि इसकी आसक्ति निश्चल थी परन्तु दस्यु स्वभावतः क्रूर एवं कपटी था। एक बार नर्तकी के आभूषणों को हस्तगत करने के लिए उसे आभूषणों से सुसज्जित कराकर एक पहाड़ी पर ले गया। परन्तु वहाँ जाने के पश्चात उस गणिका को दस्यु की कलुषित मनोवृत्ति का ज्ञान हो गया। नर्तकी ने धैर्य एवं साहस का परिचय देते हुए उसे पर्वत से नीचे गिरा दिया।[8] यदा–कदा ऐसी गणिकायें भी मिलती थी जो निष्ठा एवं पवित्रता में पत्नियों से भी आगे थी। एक जातक से ऐसी गणिका का वर्णन मिलता है जिससे अत्यन्त लम्बी अवधि तक अपने प्रिय की प्रतीक्षा की, अन्ततः उसका प्रियतम आया। परन्तु उसके विरह काल में उस गणिका ने किसी अन्य पुरुष का स्वागत करना तो दूर किसी का ताम्बूल भी ग्रहण नहीं किया।[9] जातक कथाओं के सम्यक अध्ययन से विदित होता है कि गणिकाओं की जीविका मुख्यतः राजपुत्रों एवं श्रेष्ठिपुत्रों द्वारा प्रदत्त धन से चलती थी। अपने रूप तथा नृत्य द्वारा धनवान पुरुषों को वे अपने रूप पाश में बाँधती थी और उसके निर्धन होने पर उन्हे तिरस्कृत कर देंती थीं। पुरुषों से धन अर्जित करना ही इनका मुख्य उद्देश्य होता था।[10] जातकों मे राज परिवारों में रहने वाली गणिकाओं का भी उल्लेख हुआ है। वे समय–समय पर राज परिवारों में होने वाली उत्सवों में भाग लेती थीं। इन नर्तकियों के लिए राजा द्वारा संरक्षण प्राप्त होता था। तथा उनकी जीविका भी सुरक्षित होती थी। ये वेश्यायें कभी–कभी राजा के सम्पर्क से गर्भवती भी हो जाती थीं। उद्यालक जातक के प्रसंग में राजा के साथ सम्पर्क से एक वेश्या के गर्भ की सूचना प्राप्त होती है।[11] नर्तकियाँ राजाओं के साथ सुरापान भी करती थीं। काशी के एक राजा ने उद्यान क्रीड़ा के अवसर पर एक मनोज्ञा नर्तकी के साथ सुरापान किया था।[12] महाप्रलोभन तथा जातक के प्रसंगो से ज्ञात होता है कि एक नर्तकी न वैराग्योन्मुख एक राजकुमार को काम के प्रति प्रेरित कर स्वयं पटरानी पद ग्रहण करने का प्रयास किया था।[13]

गणिका के आचरण के कुत्सित पक्ष का वर्णन जातकों में अनेकत्र उपलब्ध है। जिस प्रकार कतिपय गणिकाएं गुणवती थीं उसी प्रकार कुछ गणिकाएँ अविश्वसनीय तथा क्षुद्र विचार वाली थी। एक श्रेष्ठि कुमार अपनी प्रेमिका गणिका को प्रतिरात्रि सहस्र कार्षापण दिया करता था। परन्तु एक रात वह विलम्ब से खाली हाथ पहुँचा तो उस गणिका ने उससे कहा आर्य मै गणिका हूँ–बिना सहस्र कार्षापण लिए मै किसी की अंकशायिनी नही बन सकती। अतः जब आपके पास सहस्र कार्षापण हो तो मेरे निकट आवें। श्रेष्ठिपुत्र ने बड़ा अनुनय विनय किया पर उसकी याचना व्यर्थ रही। उस गणिका ने अपनी दासियों को उसे बलपूर्वक निकाल देने का आदेश दिया। इस अप्रत्याशित व्यवहार का इस श्रेष्ठिकुमार पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह संसार त्याग कर सन्यासी बन गया।[14]

जातक कथाओं में प्रायः ऐसी गणिकाओं का वर्णन मिलता है जो समृद्ध थीं। अम्बपाली तथा सालवती राजगणिकाएं थीं और वे राजधानियों में निवास करती थीं। समाज से उनको पर्याप्त धन आदर और यश प्राप्त हुआ, परन्तु यही बात एक सामान्य गणिका के विषय में नही कही जा सकती है। सभ्य समाज चाँदी सोने के थोड़े से टुकड़ों के बदले शरीर विक्रय के कर्म को हेय दृष्टि से देखता था। बौद्ध साहित्य के अनेक सन्दर्भो में इसे नीच कर्म की संज्ञा दी गयी है। कुछ गणिकाओं के लिए प्रयुक्त कुम्भदासी सदृश शब्द से यही भाव प्रकट होता है। विनय पिटक में उपलब्ध कतिपय सन्दर्भों से यह विदित होता है कि तत्कालीन गणतंत्रीय व्यवस्था में गणिकाओं को समुचित सम्मान प्राप्त था। वे अभिजात वर्ग की सौन्दर्योपयोग लिप्सा की तृप्ति का साधन मात्र

नही थी वे गायन–वादन नृत्य आदि कलाओं का यथोचित संरक्षण एवं विकास भी करतीं थी। गणिकाओं के माध्यम से जनमानस का सौन्दर्यानुराग परिष्कृत एवं परितुष्ट होता था। ये महोत्सवों के अवसर पर लोकरंजनार्थ संगीत नृत्य के हृदयग्राही प्रदर्शन करती थी। भगवान बुद्ध द्वारा अम्बपाली का आतिथ्य स्वीकार करने तथा अम्बपाली का भिक्षु संघ को आम्रवाटिका दान करने की घटनाओं से प्रतीत होता है कि तत्कालिन समाज में गण्किाओं को हेय दृष्टि से नही देखा जाता था। भगवान बुद्ध के दर्शनार्थ अम्बपाली ने अनेक सुशोभित रथों को लेकर जिस ठाट–बाट से कोटिग्राम के लिए प्रस्थान किया था। उससे ऐसा प्रतिभाषित होता है कि उसका रहन–सहन राजसी था। गणिका की कोख से उत्पन्न संतानों का समाज में तिरस्कार भी नही किया गया। यदि वे गणिका पुत्र प्रतिभा सम्पन्न होता था तो उसे अपनी योग्यता के अनुरूप उच्च पद प्राप्त करने में बाधा नही पड़ती थी।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महावग्ग, 8/12
2. महावग्ग, 8/1/3
3. वही, 6/30/2,6/30/5, जातक संग्रह, 4/240 से 501
4. वही, 8/12
5. महावग्ग, 8/114
6. जातक सं0 4 पृष्ठ 249, कणवेर जातक, पृष्ठ 318, सुलसा जातक, पृष्ठ 419
7. जातक सं0 3, पृष्ठ 475–76
8. जातक सं0 3, पृष्ठ 435–38
9. जातक सं0 2, पृष्ठ 380
10. जातक, 2.118
11. जातक, 4.480
12. जातक, 3.313
13. जातक, 3.263, 5.507

Cite this Article-

'अर्चना, प्रो0 दिग्विजयनाथ' "प्राचीन भारत में गणिका जीवनः बौद्ध साहित्य के विशेष सन्दर्भ में"', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:10, October 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i30011

Published Date- 08 October 2024